1	2	3	4	5
27	दिल्ली	225.0	446.0	13.5
28	गोवा दमन और द्वीव	40.5	20.7	3.3
29	लक्षद्वीप	5.5	0.07	0.2
30	मिजोरम	57.5	9.45	1.7
31	पांडिचेरी	17.25	2.54	3.9
	जोड़	7726.25	6845.03	558.1

* केवल अप्रैल से नवम्बर, 1986 तक की अवधि के दौरान आवंटित की गई मात्रा। दिसम्बर 1986 के लिए आबंटन अभी किया जाना है।

कृषि क्षेत्र में जन-शक्ति की आवश्यकता

2443. श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि व्यावहारिक जन शक्ति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली को 1982 में कृषि के क्षेत्र में अपेक्षित जन शक्ति का मूल्याकन करने संबंधी अध्ययन करने का कार्य सौंपा गया था ;

(ख) यदि हां, तो संस्थान द्वारा अब तक अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत न किए जाने के क्या कारण हैं हालांकि उसे 18 महीने की अवधि के अन्दर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था;

(ग) क्या यह भी सच है कि 1986 में विभिन्न कृषि विश्व विद्यालालयों को प्रकृति और अन्तः प्रजनन का विस्तार सम्बन्धी जो दस्तावेज भेजा गया था वह अपूर्ण था; और

(घ) ऐसे कितने अध्यायों, अनसंधानों आदि के प्रतिवेदन अब तक प्रस्तुत नहीं किए गए, जिनके सम्बन्ध में प्रतिवेदन की मांग की गई थी और इसके क्या कारण है ?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा): (क) जी हां, श्रीमान।

(ख) विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों और काम में लगाये गयें अभिकरणों से आंकड़े एकत्रित करने में बार-बार भेजे गये अनुस्मारकों के बावजूद व्यावहारिक जनशक्ति अनुसंधान संस्थान, नयी दिल्ली द्वारा कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

(ग) व्यावहारिक जनशक्ति अनुसंधान संस्थान नयी दिल्ली ने "नेचर एण्ड एक्सटेंट आफ इन-ब्रीडिग इन एग्रीकल्चरल यनिवर्सिटीज" शीर्षक कार्यपत्र दिनांक 6-6-86 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को प्रस्तुत किया भा.कृ.अ.प. ने इस कार्य-पत्र की जांच की और यह पाया गया कि या इसमें इस अध्ययन से अपेक्षित विभिन्न सूचनाओं की कमी है। भा.कृ.अ.प. द्वारा की गयी टिप्पणियों के आधार पर यह संस्थान इस कार्य-पत्र को और अधिक संशोधित करने को सहमत हो गया है। तथापि यह उल्लेख किया जा सकता है कि यह कार्य पत्र कभी भी किसी विश्वविद्यालय को नहीं भेजा गया।

(घ) अपने प्रकार का यह अकेला अध्ययन है और जनशक्ति नियोजन से संबंधित अन्य कोई रिपोर्ट किसी अन्य संस्थान से नही मागी गई है।